शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण जीवन का अर्थशास्त्र

बसंता सोलंकी (शोधार्थी)
शासकीय कन्या महाविद्यालय
रतलाम, मध्यप्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारत गाँवों का देश है। यहाँ अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा राष्ट्रीय आय का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण अर्थव्यवस्था से प्राप्त होता है। आधे से अधिक लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है, इसलिए गाँवों के विकास के बिना दे श का विकास संभव नहीं है। गाँधी ने कहा था "असली भारत गाँवों में बसता है। भारतीय ग्राम्य जीवन सादगी और प्राकृतिक शोभा का भण्डार है। " विकास की अवधारणा के साथ ग्रामीण क्षेत्र में अनेक स्तरों पर परिवर्तन दिखाई देता है। इसमें आर्थिक परिवर्त मुख्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन के अर्थशास्त्र पर विचार किया गया है।

भूमिका

भारतीय गाँव के निवासियों का आय का मुख्य साधन कृषि है। कुछ लोग पशुपालन और कुटीर उद्योग से अपनी जीविका कमाते हैं, कठोर परिश्रम, सरल स्वभाव और वि शाल हृदय ग्रामीण जीवन की वि शेषताएँ हैं। भारतीय किसान सुबह से शाम तक खेतों में कड़ी मेहनत करते हैं। बहुत ही कम किसान ऐसे हैं, जिनके पास स्वयं की पर्याप्त जमीन है। अधिकतर खेतिहर मजदूर हैं। प्रायः ये फसल के कुछ अंश की हिस्सेदारी या नकद धन के पारिश्रमिक के आधार पर खेती संबंधी मजदूरी करते हैं। प्रायः बाढ़, अतिवर्षा एवं अतिशुष्कता के कारण फसल नष्ट हो जाती है। आजादी के बाद खेती के विकास के साथ-साथ ग्राम विकास की गति भी बढ़ी। आज भारत के अधिकांश गाँवों में पक्के मकान पाये जाते हैं। लगभग सभी किसानों के पास अपने हल और बैल हैं। बहुतों के पास ट्रेक्टर आदि भी पाये जाते है। ग्राम सुधार की दृष्टि से शिक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। आज अधिकां श गाँवों में प्राथमिक पाठ शालाएँ हैं, जहाँ नहीं है , वहाँ भी पाठशाला खोलने के प्रयत्न चल रहे हैं। लेकिन ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में तुलनात्मक रूप से सुधार नहीं हुआ है।

किसानों की दयनीय दशा

भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति का एक प्रमुख कारण ऋण है। सेठ-साहूकार थोड़ा-सा कर्ज किसान को देकर उसे अपनी फसल बहुत कम दाम में बेचने को मजबूर कर देते हैं। खेती की अलावा अन्य कुटीर उद्योग नहीं होने से किसान की आर्थिक स्थिति नाजुक बनी रहती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के साधन बहुत कम थे। गाँव से पक्की सड़क 15-20 किमी. दूर तक हुआ करती थी। कहीं-कहीं बस पकड़ने के लिए ग्रामीणों को 30-40 किमी. तक पैदल जाना पड़ता था। जब धीरे-धीरे यातायात के साधनों का विकास किया जा रहा है। फिर भी ग्राम सुधार की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। अभी भी अधिकां श भारतीय किसान निरक्षर है। भारतीय गाँवों में उद्योग धंधों का विकास

शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अधिक नहीं हो सका। भारत की अर्थव्यवस्था दो क्षेत्रों में मिलकर बनी हुई। ग्रामीण क्षेत्र एवं गैर ग्रामीण क्षेत्र। ग्रामीण क्षेत्र पुनः दो उपक्षेत्रों से मिलकर बना है। जिसमें कृषि उपक्षेत्र एवं गैर कृषि उपक्षेत्र सम्मिलित है। कृषि उपक्षेत्र में कृषि एवं इसकी सहायक आर्थिक गतिविधियाँ जैसे फसल, पशुपालन, दुग्धशाला, मत्स्य कुक्कुट एवं वानिकी सम्मिलित है। गैर कृषि उपक्षेत्र में उद्योग, व्यापार एवं सेवाओं से संबंधित आर्थिक गतिविधियाँ सम्मिलित होती है। उद्योग से यहाँ तात्पर्य कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग , खादी, हथकरघा, हस्तशिल्प आदि से है। व्यापार से यहाँ तात्पर्य कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग , खादी, हथकरघा, हस्तशिल्प आदि से है। व्यापार से यहाँ तात्पर्य सूक्ष्म उद्यम, सामान्य वस्तुओं का लेन-देन, छोटी दुकानें, लघु व्यापारियों आदि से है , जबकि सेवाओं से तात्पर्य आवागमन , संचार, बैंक, आगत, आपूर्ति, कृषि एवं गैर कृषि उत्पादों के विपणन आदि से है। ग्रामीण क्षेत्र के प्रमुख हिस्सेदार कृषक , कृषि एवं गैर कृषि मजदूर , शिल्पी, दुकानदार, साहूकार एवं वे लोग हैं जो संचार आवागमन , प्रक्रियाकरण, बैंक, शिक्षा एवं विस्तार की सेवाओं को प्रदान करने में संलग्न है। गाँवों के विकास पर ही दे श का विकास निर्भर है। यहाँ तक कि बड़े उद्योगों का माल भी तभी बिकेगा जब किसान के पास पैसा होगा। थोड़ी सी सफाई या कुछ सुविधाएँ प्रदान कर देने मात्र से गाँवों का उद्धार नहीं हो सकेगा। भारतीय गाँवों की समस्याओं पर पूरा-पूरा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

समस्याएँ

1.ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य पीने का पानी और आवास, स्वास्थ्य, मनोरंजन का अभाव तथा सड़क की असुविधा आदि विशेष समस्याएँ हैं।

2.गाँव के निर्धन वर्ग के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जाए, उनकी आर्थिक, सामाजिक विषमताएँ है।

3.ग्रामीण समुदाय में व्याप्त , अशिक्षा, निर्धनता, बेरोजगारी, कृषि के पिछड़ेपन , गंदगी तथा रुढ़िवादिता जैसी समस्याएँ हैं।

सुझाव

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन स्तर सुधारने के निम्नलिखित सुझाव है-

1. कृषि की द शाओं में सुधार किया जाए , सामाजिक तथा आर्थिक संरचना को बदला जाए।
2. गाँव में स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, ऊर्जा आपूर्ति, स्वच्छता, आवास आदि स्थिति में सुधार करना।
3. किसानों को कृषि योग्य भूमि प्रदान की जाए।
4. जनस्वास्थ्य तथा शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया जाए तथा दुर्बल वर्गों को विषेष संरक्षण प्रदान किया जाए।

5.ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं कुटीर उद्योगांे का विकास की दिषा में सृजनात्मक परिवर्तन किया जाए।

निष्कर्ष

ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी ने ग्रामीण जनसंख्या के सर्वांगीण विकास के विचार को समाहित किया था। इसमें मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष सामाजिक , आर्थिक व राजनैतिक , आत्मनिर्भर व स्व शासित ग्रामीण विकास उद्दे श्य लघु, स्वतंत्र एवं स्वावलंबी समुदायों का निर्माण करना है, जो ऐसे ग्रामों में निवास करते हों, जहाँ जीवन एवं शुद्ध हो, जहाँ जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। गाँवों में जो भी समस्याएँ हैं, उसे दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाने की आवश्यकता है । गावों को आर्थिक रूप से सक्षम और सुदृढ किया जाना चाहिए । देश के

विकास में उनके योगदान को अलग से रेखांकित किया जाये।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *ग्रामीण विकास एवं नियोजन , रेखा शर्मा, 2012, रावत पब्लिकेशन, पृष्ठ 125*
2. *ग्रामीण विकास का आधार : आत्मनिर्भर पंचायतें प्रतापमल देवपुरा (2006) अंसारी रोड़ दरियागंज , नई दिल्ली-110002*
3. *कुरुक्षेत्र (2007) मनीष कुमार , ग्रामीण विकास मंत्रालय की प्रमुख मासिक पत्रिका नई दिल्ली-110011 पृष्ठ27*
4. *भारत में सामाजिक समस्याएं, तेजस्कर पाण्डेय 2012, रावत पब्लिकेशन, पृष्ठ383*